

प्रथमः  
पाठः  
१

## मङ्गलाचरणम्



सरस्वति! नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणि।  
विद्यारम्भं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥१॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,  
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।  
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,  
त्वमेव सर्वं मम देव-देव ॥२॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।  
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥३॥

### भावार्थः

१. हे वरदायिनि ! हे इच्छारूपिणि सरस्वति ! तुभ्यं नमः । अहं विद्यायाः आरम्भं करिष्यामि । अस्यां विद्यायां सदा मम कृते पूर्णतायाः प्राप्तिः भवतु ।
२. हे ईश्वर ! त्वम् एव माता असि, त्वम् एव पिता असि । त्वम् एव बन्धुः असि, त्वम् एव सखा असि । त्वम् एव विद्या असि, त्वम् एव धनम् असि । हे देवाधिदेव ! त्वम् एव मम सर्वस्वम् असि ।
३. सर्वे प्राणिनः सुखिनः भवन्तु, सर्वे नीरोगाः भवन्तु, सर्वे कल्याणं पश्यन्तु, कोऽपि प्राणी दुःखी न भवेत् ।

### शब्दार्थः

| शब्दः        | सरलार्थः          | हिन्दी अर्थ            |
|--------------|-------------------|------------------------|
| सरस्वति !    | हे शारदे !        | हे सरस्वती ! (सम्बोधन) |
| नमस्तुभ्यम्  | तुभ्यं नमः        | तुम्हें नमस्कार        |
| वरदे !       | वरदायिनि !        | हे वर देने वाली !      |
| कामरूपिणि !  | इच्छारूपिणि !     | हे इच्छारूपिणी !       |
| विद्यारम्भम् | विद्यायाः आरम्भम् | विद्या का आरम्भ        |
| करिष्यामि    | विधास्यामि        | करूँगा                 |
| सिद्धिर्भवतु | पूर्णता भवतु      | पूर्णता हो             |
| मे           | मम                | मेरी (मुझे)            |
| सदा          | सर्वदा            | हमेशा                  |
| बन्धुः       | सम्बन्धी          | सम्बन्धी               |
| सखा          | मित्रम्           | मित्र                  |
| द्रविणम्     | धन-ऐश्वर्यादिकम्  | धन-सम्पत्ति            |
| सर्वम्       | सर्वस्वम्         | सब कुछ                 |
| मम           | मे                | मेरा                   |
| देव-देव !    | देवानां देव !     | हे देवों के देव !      |
| सर्वे        | सर्वे (प्राणिनः)  | सभी (प्राणी)           |
| भवन्तु       | सन्तु             | हो/होवें               |
| सुखिनः       | सुखयुक्ताः        | सुखी                   |
| निरामयाः     | रोगरहिताः         | नीरोगी                 |
| भद्राणि      | कल्याणानि         | कल्याण                 |



|          |            |              |
|----------|------------|--------------|
| पश्यन्तु | अवलोकयन्तु | देखें        |
| मा       | न          | नहीं         |
| कश्चिद्  | कोऽपि      | कोई          |
| दुःखभाग् | दुःखी      | दुःख का भागी |
| भवेत्    | भवितव्यः   | हो           |

### अध्यासः

( १ ) उच्चारणं कुरुत -

|              |             |             |              |
|--------------|-------------|-------------|--------------|
| सरस्वति !    | नमस्तुभ्यम् | कामरूपिणि ! | विद्यारम्भम् |
| सिद्धिर्भवतु | त्वमेव      | बन्धुश्च    | द्रविणम्     |
| निरामयाः     | भद्राणि     | कश्चिद्     | दुःखभाग्     |

( २ ) मञ्जूषातः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

|         |      |         |           |        |
|---------|------|---------|-----------|--------|
| द्रविणं | माता | कश्चिद् | सरस्वति ! | सुखिनः |
|---------|------|---------|-----------|--------|

- (क) ..... नमस्तुभ्यम्।
- (ख) त्वमेव ..... च पिता त्वमेव।
- (ग) त्वमेव विद्या ..... त्वमेव।
- (घ) सर्वे भवन्तु ..... ।
- (ङ) मा ..... दुःखभाग् भवेत्।

( ३ ) परस्परं सुमेलयत -

- (क) विद्यारम्भं सखा त्वमेव
- (ख) त्वमेव बन्धुश्च पश्यन्तु
- (ग) त्वमेव सर्वे करिष्यामि
- (घ) सर्वे सन्तु मम देव-देव।
- (ङ) सर्वे भद्राणि निरामयाः।

#### अध्यापकाय निर्देशः -

- । अध्यापकः प्रदत्तश्लोकानां सस्वरवाचनं कारयेत्।
- । श्लोकानां कण्ठस्थीकरणं कारयित्वा छात्रान् प्रार्थनासभायां प्रस्तोतुं प्रेरयेत्।

## ► योग्यता-विस्तारः

१. प्रिया: छात्राः ! प्रथमे पाठे वयम् ईश्वरस्य स्मरणं कृतवन्तः । यथा वयं पुस्तकस्य आरम्भे ईश्वरस्य स्मरणं कुर्मः तथा एव दिनस्य आरम्भे अपि ईश्वरस्य स्मरणार्थं करतलदर्शनेन सह एनं श्लोकं वदामः-

करागे वसते लक्ष्मीः, करमध्ये सरस्वती ।  
करमूले तु गोविन्दः, प्रभाते करदर्शनम् ॥



२. भूमिः अस्माकं माता अस्ति किन्तु वयं प्रतिदिनम् अस्याः उपरि चलामः, पादाभ्यां स्पर्शं कुर्मः । अतः क्षमायाचनार्थं प्रातः काले एनं श्लोकं वदामः -

समुद्रवसने! देवि ! पर्वतस्तनमण्डले !  
विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं, पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥



### अध्यापकाय निर्देशः -

- । अध्यापकः बालकैः एतयोः श्लोकयोः सस्वरं गायनं कारयेत् । श्लोकानां भावविषये अपि चर्चा कुर्यात् ।

## वर्ण-विलासः

हिन्दीभाषायाः वर्णमालां भवन्तः पूर्वकक्षासु पठितवन्तः । यथा - हिन्दीभाषायाः वर्णमाला भवति, संस्कृतभाषायाः वर्णमाला अपि प्रायशः तथा एव भवति । आगच्छन्तु संस्कृतवर्णमालां जानीमः -



## संस्कृत-वर्णमाला

### स्वराः

|   |    |   |   |   |   |   |
|---|----|---|---|---|---|---|
| अ | आ  | इ | ई | उ | ऊ | ऋ |
| ऋ | लू | ए | ऐ | ओ | औ |   |

### व्यञ्जनानि

|    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|
| क् | খ্ | গ্ | ঘ্ | ঢ্ |
| চ্ | ছ্ | জ্ | ঝ্ | ব্ |
| ট্ | দ্ | ড্ | ঢ্ | ণ্ |
| ত্ | থ্ | ত্ | ধ্ | ন্ |
| প্ | ফ্ | ব্ | ভ্ | ম্ |

स्पर्शवर्णः →

य्      र्      ल्      व्

अन्तःस्थवर्णः →

শ্      ষ্      স্      হ্

चिह्नानि →

: ( विसर्गः )      । ( अनुस्वारः )      । ( हलन्तः )



अक्षराणि योजयतु चित्रं रचयतु

